

ज़री ज़रदोज़ी उद्योग: मुद्दे और चुनौतियाँ

Samridhhi Kushwaha^{1*}, Dr. Sandhya Srivastava², Dr. Kamlesh Kumar³

¹ Research Scholar, Bhagwant University

² Phd Guide, Bhagwant University

³ Co-Guide, Bhagwant University

सार - ज़री ज़रदोज़ी उद्योग, कढ़ाई का एक प्राचीन और जटिल रूप, दुनिया भर के कई क्षेत्रों में एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और आर्थिक मूल्य रखता है। इस अध्ययन का उद्देश्य समकालीन समय में इस उद्योग के सामने आने वाले मुद्दों और प्रकाश डालना है।

कीवर्ड - ज़री ज़रदोज़ी, मुद्दे, चुनौतियाँ

-----X-----

परिचय

ज़री ज़रदोज़ी उद्योग, अपने समृद्ध इतिहास और सांस्कृतिक महत्व के साथ, समकालीन दुनिया में असंख्य चुनौतियों का सामना करता है। घटते कारीगर आधार से लेकर वैश्वीकरण और प्रौद्योगिकी के दबाव तक, उद्योग का भविष्य अनिश्चित है। हालाँकि, हमारा शोध दर्शाता है कि यह सदियों पुराना शिल्प लुप्त होने से बहुत दूर है। इसके बजाय, यह 21वीं सदी की मांगों और चुनौतियों को पूरा करने के लिए विकसित और अनुकूलित हो रहा है।

सबसे उत्साहजनक निष्कर्षों में से एक स्वयं कारीगरों का लचीलापन और दृढ़ संकल्प है। वे केवल परंपरा का संरक्षण नहीं कर रहे हैं; वे नवप्रवर्तन कर रहे हैं और अपने उत्पादों के लिए नए बाज़ार ढूँढ रहे हैं। डिजिटल मार्केटिंग और ई-कॉमर्स को अपनाने के साथ-साथ लगातार सामग्री प्राप्त करने के प्रयास, उद्योग की अनुकूलन क्षमता को प्रदर्शित करते हैं।

इसके अलावा, ज़री ज़रदोज़ी शिल्प के सांस्कृतिक और कलात्मक मूल्य की बढ़ती मान्यता नए अवसर प्रदान कर रही है। उपभोक्ता हस्तनिर्मित, अनूठे उत्पादों की अधिक सराहना कर रहे हैं और यह प्रवृत्ति पारंपरिक शिल्प कौशल में रुचि के पुनरुत्थान को बढ़ावा दे सकती है।

बहरहाल, ज़री ज़रदोज़ी उद्योग के अस्तित्व और समृद्धि को सुनिश्चित करने के लिए सरकारों, गैर सरकारी संगठनों और उद्योग के खिलाड़ियों से ठोस प्रयासों की आवश्यकता है। इस समर्थन में कौशल विकास कार्यक्रम, उचित बाजारों तक पहुंच और इस शिल्प से जुड़ी विरासत और पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित करने की पहल शामिल होनी चाहिए।

ज़रदोज़ी

प्रत्येक कढ़ाई में असाधारण रिकॉर्ड और शैली होती है। उपरोक्त सभी कढ़ाईयों में सबसे महत्वपूर्ण सोने और चांदी की कढ़ाई प्रतीत होती है जिसे बाद में ज़रदोज़ी कहा गया। एक शानदार स्टील और फ़ारसी कढ़ाई 'ज़ार' शब्द से बनी है जिसका अर्थ है सोना 'डोज़ी' जिसका अर्थ है कढ़ाई। मुगल काल में इसे 'शाहीकाम' कहा जाता है। यह स्टील की कढ़ाई जिसमें 24 कैरेट सोने चांदी की सुतली का उपयोग किया जाता है। शुद्ध सोने को कुचलकर प्रथम श्रेणी की स्टील की सुतली (धागा) बनाया गया जिसका उपयोग रेशम, साटन और मखमल पर रूपांकनों की कढ़ाई के लिए किया जाने लगा। हीरे, पन्ना और मोती जैसे मूल्यवान रत्नों को शामिल करने से यह और भी बड़ा हो सकता है, जिन्हें कढ़ाई के हिस्से के रूप में कपड़े में सिल दिया जा सकता है। इस कलाकृति में कलाबटू (सोना चढ़ाया हुआ मुड़ा हुआ धागा), सलमा (बहुत पतली मुड़ी हुई स्टील की सुतली), सितारा (एक छोटा गोलाकार टुकड़ा), तिल्ली (सेक्विन), कोरा (सुस्त ज़री धागा), जैसे विभिन्न

सजावटी सामान का उपयोग किया जाता है। टिकोरा (सर्पिल रूप से मुड़ा हुआ एक सोने का धागा), चिकना (चमकदार ज़री धागा), गिजाई (रूपरेखा के लिए इस्तेमाल की जाने वाली एक गोल पतली कड़ी सुतली), और कसाब (चांदी या सोना चढ़ाया हुआ चांदी का धागा)।



आकृति 1. ज़रदोज़ी के काम से बना केप

ज़रदोज़ी हस्तकला

जब कढ़ाई सोने और चांदी के धागों से की जाती है तो उसे ज़रदोज़ी कहा जाता है। ज़रदोज़ी कढ़ाई की भारत में प्राचीन काल, ऋग्वेद के समय से ही उपस्थिति रही है। ऐसे कई उदाहरण हैं जिनमें देवताओं की पोशाक पर अलंकरण के रूप में जरी और ज़रदोज़ी कढ़ाई के उपयोग का उल्लेख है। पहले कढ़ाई का काम असली सोने की पतियों और शुद्ध चांदी के तारों से किया जाता था। हालाँकि, आज, कारीगर सोने या चांदी की पॉलिश और रेशम के धागे के साथ तांबे के तार के संयोजन का उपयोग करते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि पहले की तरह अब इतने बड़े पैमाने पर सोने/चांदी की उपलब्धता नहीं के बराबर है और कीमतें ऊँची हैं।

कढ़ाई प्राचीन वंशावली की है जिसकी उत्पत्ति संभवतः वैदिक काल के दौरान इस क्षेत्र में हुई थी लेकिन मुगल काल के दौरान शाही संरक्षण में आई। सोने और चांदी के धागों की कढ़ाई दशकों से अवध के नवाबों के दरबारों को चमकाती रही है। इसी तरह का काम बम्बई, सूरत, औरंगाबाद, हैदराबाद, आगरा, दिल्ली और वाराणसी में भी लोकप्रिय था और अभी भी यह कुछ हद तक सीमित उपयोग के लिए है। अब यह काम मुख्य रूप से लखनऊ, भोपाल, हैदराबाद, दिल्ली, आगरा, कश्मीर, मुंबई, अजमेर और चेन्नई का है। कामदानी शैली में धातु का उपयोग दो या तीन टांके वाले चपटे तार के रूप में किया जाता है। ज़रदोज़ी दिखने में काफी समृद्ध होती है। आमतौर पर साटन या वेलवेट जैसी भारी सामग्री पर किया जाता है। नीले और सफेद रंग की डाई को ब्रश से समान रूप से फैलाया जाता है, जबकि गहरे

रंग के कपड़े पर सफेद छपाई के लिए सफेद एल्यूमीनियम पाउडर छिड़का जाता है।



आकृति 2. ज़रदोज़ी हस्तकला

स्रोत: लोमटरी.कॉम

ज़रदोज़ी शिल्प की प्रक्रिया

ट्रेसिंग: कढ़ाई की प्रक्रिया में पहला कदम कपड़े पर डिज़ाइन की नकल करना है। रूपांकनों को पहले ट्रेसिंग पेपर या बटर पेपर पर स्केच किया जाता है और सुई का उपयोग करके डिज़ाइन की रूपरेखा पर छोटे छेद किए जाते हैं। इसके बाद कपड़े को एक सपाट सतह पर रखा जाता है और ट्रेसिंग शीट को उस स्थान पर रखा जाता है जहां मोटिफ की आवश्यकता होती है। कारीगर या तो नील और मिट्टी के तेल या चाक पावर और मिट्टी के तेल के मिश्रण का उपयोग करते हैं। दोनों में से किसी एक घोल में कपड़ा भिगोकर खाखा (ट्रेसिंग शीट) पर रगड़ा जाता है ताकि घोल छिद्रों से रिसकर कपड़े तक पहुंच जाए। इस प्रकार डिज़ाइन कपड़े पर अंकित हो जाते हैं। इस प्रक्रिया को चपाई (मुद्रण) कहा जाता है और यह पुरुषों या महिलाओं द्वारा किया जाता है जिन्हें चपाई वाले/वाली कहा जाता है।

अड्डा सेट करना: यह एक लकड़ी का फ्रेम है जिस पर कढ़ाई किए जाने वाले कपड़े को कसकर फैलाया जाता है और इसे काम करने के लिए उपयुक्त बनाया जाता है। इस फ्रेम में चार कोनों पर चार स्टूल या पोस्ट पर समायोज्य नॉकडाउन बार हैं। फ्रेम को कपड़े की चौड़ाई के अनुसार समायोजित किया जा सकता है। ये फ्रेम बड़े होते हैं और मुख्य रूप से शीशम से बने होते हैं क्योंकि यह मजबूत होते हैं, लेकिन कभी-कभी इसके विकल्प के रूप में बांस का भी उपयोग किया जाता है। एक फ्रेम में दोनों तरफ 4-6 कारीगर बैठकर एक साथ काम कर सकते हैं। फ्रेम की ऊंचाई जमीन से 1.5-2 फीट है। कारीगर या तो

फर्श पर या गद्दों पर बैठते हैं। अगर डिज़ाइन छोटा है तो लकड़ी के तख्तों की जगह छोटे धातु के फ्रेम का भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

कढ़ाई: जिस कपड़े पर कढ़ाई करनी होती है, उसे पहले लकड़ी के फ्रेम से जुड़े दूसरे कपड़े, जिसे 'पट्टी' कहा जाता है, से सिला जाता है। कारीगर अपने औज़ारों के साथ लकड़ी के ढाँचे, अड्डे के चारों ओर पालथी मारकर बैठते हैं। उपकरणों में घुमावदार हुक, सुई, सलमा के टुकड़े (सोने के तार), सितारे (धातु के तारे), गोल-सेक्विन, कांच और प्लास्टिक के मोती, दबका (धागा) और कसाब (धागा) शामिल हैं। आरी (सुई) की सहायता से कढ़ाई की शुरुआत की जाती है। आरी की नोक पर लगा हुक कारीगर को कपड़े के ऊपर और नीचे दोनों तरफ धागों को पिरोने में सक्षम बनाता है। सुई सिलाई मशीन की तरह ही काम करती है। कढ़ाई की यह विधि अत्यधिक समय लेने वाली है और इसलिए महंगी भी है। जटिलता के आधार पर किसी डिज़ाइन को पूरा करने में एक दिन या एक महीना लग सकता है।

फिनिशिंग: कढ़ाई पूरी होने के बाद अतिरिक्त धागों को काट दिया जाता है और कपड़े को अड्डे से बाहर निकाल लिया जाता है। फिर धुलाई की जाती है और अंत में इस्त्री की जाती है, पैक किया जाता है और बिक्री के लिए बाजार में भेजा जाता है।(ववव.इसकॉर्स.इन)

जरदोजी उत्पाद मुख्य रूप से लखनऊ और आसपास के छह जिलों, हरदोई, सीतापुर, बाराबंकी, उन्नाव, अमेठी और रायबरेली में बनाए जाते हैं।

मुकीलिका बनर्जी और डैनियल मिलर ने अपनी पुस्तक द साड़ी में तर्क दिया है कि 2001 की बॉलीवुड फिल्म "कभी खुशी कभी गम" ने जटिल जरी कढ़ाई वाले शिफॉन को फिर से लोकप्रिय बना दिया।

जरदोजी शिल्प का ऐतिहासिक विकास

जब हम इस शिल्प के प्राचीन सुधार का संकेत देते हैं। इस कलाकृति का सबसे पुराना दस्तावेजी प्रमाण वैदिक युग में देखा जा सकता है। वैदिक काल में, सोने का उपयोग कपड़े के आभूषणों में कई तरह से किया जाता रहा है; कपड़े को सोने और चाँदी के रंग से चित्रित करना, कपड़े को कढ़ाई और पिपली से सजाना, सोने या चाँदी के साथ उच्च कीमत वाली विभिन्न शैलियों की बुनाई करना आदि। ऋग्वेद में अटका, द्रपी, पेसा जैसे कुछ शब्द कहे गए हैं जो सिले हुए कपड़ों का संकेत देते हैं। पांच समय की अवधि में अटका सोने के धागे से कढ़ाई किए गए परिधान के करीब पहुंचता

है। इसे सोने का पदार्थ कहा जाता था। पी.सी. के समान रॉय ने महाभारत में इस बात पर प्रकाश डाला कि कंबोज के राजा ने युधिष्ठिर को कई प्रकार की जानवरों की खालें और सोने के धागे से कढ़ाई किए हुए ऊनी कंबल (ऊनी वस्त्र) प्रदान किए थे। वाल्मिकी रामायण में सोने के धागों से बनी चित्रकारी के अनेक प्रमाण मिलते हैं। महाकाव्य महाराजात्वस के बारे में बताता है कि सोने और चाँदी के धागे से कढ़ाई किए गए वस्त्र। इन सन्दर्भों से यह स्पष्ट होता है कि वेशभूषा पर सोने, चाँदी के धागों से की गई चित्रकारी पूरे महाकाव्य काल में भव्य संस्कृति का हिस्सा बन गई।

शिल्प पर यूरोपीय प्रभाव

ब्रिटिश काल में इस चित्रकला पर यूरोपीय प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। यहां तक कि नवाबों की पोशाकें भी पश्चिमी पहनावे के साथ यूरोपीय फैशन और डिजाइन का अहसास कराती थीं। यूरोपीय भी मुख्य रूप से पुर्तगाली इस पेंटिंग के बहुत शौकीन हैं। बर्डवुड का मानना है कि छतरियां, छतर, हाथी ड्रेपरियां, घोड़े के आवरण, ग्रामीण आवास और कैपेरिसन पर इतना प्रसिद्ध भव्य सोने का स्कॉल अलंकरण सोलहवीं शताब्दी की इतालवी नींव के डिजाइन थे। पुर्तगालियों ने इतालवी डिजाइनों में कढ़ाई करने के लिए साटन को भारत भेजा। इनसे बाद के समय में लखनऊ के अलावा गुलबर्गा, अहमदाबाद और हैदराबाद की पेंटिंग को बढ़ावा मिला। वे इन पेंटिंग के साथ कढ़ाई करने के लिए कपड़े भेजते थे। इस पेंटिंग को नवाबों के समय में बहुत संरक्षण मिला और ब्रिटिश काल में इसका प्रचलन हुआ।

वर्तमान परिदृश्य

लेकिन वर्तमान में इस पारंपरिक शिल्प पर सही ध्यान नहीं दिया जा रहा है। अभी भी लखनऊ जिले में 2 लाख से अधिक लोग इसमें चल रहे हैं। लेकिन उनकी स्थिति बहुत दयनीय है। उन्हें पर्याप्त मजदूरी नहीं मिल रही है। जैसे ही मैं पेंटिंग के क्षेत्र में गया और मुझे पता चला कि ज्यादातर जरदोजी अपनी कमाई से खुश नहीं हैं। उन्होंने कहा कि हम आठ घंटे तक लगातार बैठकर पेंटिंग करते हैं जिसे 'नफरी' कहा जाता है। और प्रति दिन के हिसाब से अधिकतम डेढ़ सौ से दो सौ रुपये मिलते थे। मासिक आय 5000 से अधिक नहीं है। इतनी कम या बिल्कुल भी राशि से घर चलाना बहुत कठिन हो सकता है। वेतन वितरण में भी लैंगिक भेदभाव होता है। कामकाजी घंटों के बराबर होने पर भी महिला जरदोज को बहुत कम नकदी

मिलती है। उन्हें नेत्र रोग, पीठ के निचले हिस्से में दर्द, गर्दन में दर्द जैसी वैज्ञानिक समस्याओं का भी सामना करना पड़ा। इसलिए वे इस पेंटिंग को छोड़ने के लिए मजबूर हैं।

शिल्प और शिल्पकार पर बाहरी और आंतरिक कारकों का प्रभाव

कई बाहरी और आंतरिक कारकों ने शिल्प और शिल्पकार में परिवर्तन को प्रभावित किया। “बहुत सारे पुरातात्विक निष्कर्ष, साहित्यिक स्रोत, प्राचीन नक्काशी और कलाकृतियाँ हैं जो विभिन्न युगों के दौरान अपना प्रभाव व्यक्त करते हैं। दुनिया के विभिन्न हिस्सों से आप्रवासियों, आक्रमणकारियों और व्यापारियों, जो अपनी कला और संस्कृति के साथ आए, ने परिणामस्वरूप भारतीय संस्कृति और कला के साथ जटिल सांस्कृतिक आदान-प्रदान किया। यह घटना पारंपरिक भारतीय कलाकारों और शिल्पकारों की प्रेरणा पर प्रभाव में परिलक्षित हुई। रोमन साम्राज्य के साथ भारतीय व्यापार बहुत सफल रहा। यह मुख्य रूप से अरब नाविकों द्वारा कैम्बे की खाड़ी के बंदरगाहों के माध्यम से संचालित किया जाता था। ये व्यापारी पहले व्यक्ति थे जिन्होंने इस्लामी आस्था को भारत में पहुंचाया और तटीय गुजरात के विभिन्न कपड़ा हस्तशिल्प के कारीगरों को प्रभावित किया” (फोर्ब्स, 1982)।

मुद्दे और चुनौतियाँ

ज़री ज़रदोज़ी उद्योग, जो धातु के धागों, मोतियों और सेक्विन का उपयोग करके जटिल कढ़ाई और अलंकरण में माहिर है, को कई मुद्दों और चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ये चुनौतियाँ उत्पादन, रोजगार, स्थिरता और बाजार प्रतिस्पर्धात्मकता सहित उद्योग के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित कर सकती हैं। ज़री ज़रदोज़ी उद्योग के सामने आने वाले कुछ सामान्य मुद्दे और चुनौतियाँ इस प्रकार हैं:

कुशल श्रमिकों की कमी: ज़री ज़रदोज़ी कढ़ाई की कला में कुशल कुशल कारीगरों को ढूँढना और उन्हें बनाए रखना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। इस कला के लिए वर्षों के प्रशिक्षण और अनुभव की आवश्यकता होती है, और युवा पीढ़ी अक्सर अन्य, आर्थिक रूप से अधिक फायदेमंद करियर पथ पसंद करती है।

उच्च श्रम तीव्रता: ज़री ज़रदोज़ी का काम श्रम-गहन है, और जटिल डिजाइन तैयार करने में समय लग सकता है। इससे मशीन-आधारित कढ़ाई की तुलना में उत्पादन प्रक्रिया धीमी और अधिक महंगी हो जाती है।

सामग्री की लागत: कच्चे माल की लागत, जैसे असली धातु के धागे और उच्च गुणवत्ता वाले मोती और सेक्विन, अधिक हो सकते हैं। इससे लाभ मार्जिन पर दबाव पड़ सकता है, खासकर छोटे पैमाने के कारीगरों और व्यवसायों के लिए।

मशीन कढ़ाई से प्रतिस्पर्धा: मशीन कढ़ाई के उदय ने ज़री ज़रदोज़ी उद्योग के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती पेश की है। मशीनें लागत और समय के एक अंश पर हाथ-कढ़ाई के रूप को दोहरा सकती हैं, जिससे वे बड़े पैमाने पर बाजार निर्माताओं के लिए अधिक आकर्षक बन जाती हैं।

गुणवत्ता नियंत्रण: कारीगर कौशल और तकनीकों में भिन्नता के कारण हाथ से कढ़ाई किए गए टुकड़ों में लगातार गुणवत्ता बनाए रखना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। गुणवत्ता नियंत्रण महत्वपूर्ण है, खासकर जब अंतरराष्ट्रीय बाजारों में सख्त गुणवत्ता मानकों के साथ आपूर्ति की जाती है।

डिज़ाइन नवाचार: बाज़ार में प्रासंगिक और प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए डिज़ाइन और उत्पाद पेशकशों में निरंतर नवाचार की आवश्यकता होती है। पारंपरिक ज़री ज़रदोज़ी डिज़ाइनों को आधुनिक स्वाद और फैशन रुझानों के अनुरूप अपनाने की आवश्यकता हो सकती है।

बाज़ार तक पहुंच: व्यापार बाधाओं, आयात/निर्यात नियमों और बड़े निर्माताओं से प्रतिस्पर्धा के कारण छोटे पैमाने के कारीगरों और व्यवसायों के लिए वैश्विक बाजारों तक पहुंच मुश्किल हो सकती है।

कोविड-19 प्रभाव: कोविड-19 महामारी ने वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं को बाधित कर दिया, जिससे ज़री ज़रदोज़ी उत्पादों का उत्पादन और वितरण प्रभावित हुआ। लॉकडाउन और कम उपभोक्ता खर्च ने भी महत्वपूर्ण चुनौतियां पेश कीं।

वैश्वीकरण, ब्रांडेड परिधानों और बहुमुखी उपभोक्ता प्राथमिकताओं द्वारा उत्पन्न चुनौतियाँ और मुद्दे

पश्चिमी दुनिया में औद्योगिक क्रांति के बाद से हस्तशिल्प उद्योग को चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इसका प्रभाव भारत में ब्रिटिश शासन के दौरान भी पड़ा। अंग्रेजों ने भारत की देशी हस्तशिल्प की अपेक्षा पश्चिमी कारखानों की मशीन से बनी वस्तुओं को प्राथमिकता दी और बढ़ावा दिया। ये हस्तशिल्प भारतीय संस्कृति और अर्थव्यवस्था की रीढ़ थे। एलपीजी यानी

उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण के युग में यह रीढ़ और भी खतरे में पड़ गई। इन सभी कारकों ने संचयी रूप से भारत में हस्तशिल्प उद्योग के पारंपरिक और विरासत ढांचे को परेशान और खराब कर दिया। जरदोजी भी इस घटना का अपवाद नहीं है। इसे वैश्वीकरण, औद्योगीकरण और ब्रांडेड परिधानों, मशीन से बने उत्पादों की बाढ़ से कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा है जो पारंपरिक जरदोजी काम के प्रतिष्ठित डिजाइनों की नकल करते हैं। हालाँकि, समकालीन जरदोजी उद्योग जरदोजी कढ़ाई में सस्ते कच्चे माल, कृत्रिम धातुओं को शामिल करके कुछ हद तक इन प्रभावों पर काबू पाने में सफल रहा है। पारंपरिक सामग्रियों की कीमत अधिक होने के कारण जरदोजी में शुरुआती तौर पर शुद्ध सोने और चांदी के धागों का उपयोग करने के बजाय इस उद्योग में तांबे, प्लास्टिक या सिंथेटिक सामग्री आदि जैसी सस्ती धातुओं के धागों और छोटे कारखानों में बने सजावटी कच्चे माल का उपयोग किया जा रहा है। जरदोजी कढ़ाई के डिजाइन और पैटर्न स्पष्ट रूप से स्थानीय, राष्ट्रीय और वैश्विक बाजार की मांग के अनुसार बदल गए हैं। आजकल आधुनिक उपभोक्ताओं, प्रतिष्ठित हस्तियों, फिल्मी सितारों, मशहूर हस्तियों द्वारा उनकी मांग के अनुसार बड़ी संख्या में उपयोग की जाने वाली वस्तुओं पर जरदोजी कढ़ाई की जा रही है। बाजार में कुछ सौ रुपये से लेकर करोड़ों रुपये तक की कीमत वाले कढ़ाई उत्पादों की एक बड़ी रेंज उपलब्ध है, जो मशहूर हस्तियों के लिए उच्च स्तरीय फैशन डिजाइनरों और कुशल श्रमिकों द्वारा डिजाइन किए जाते हैं। कारीगरों और इस उद्योग के अन्य विभिन्न हितधारकों ने आधुनिक बाजार की जरूरतों और मांगों को अपनाने की कोशिश की है। उन्होंने लागत और गुणवत्ता के बीच संतुलन बनाए रखने की पूरी कोशिश की है। लेकिन अभी भी इस उद्योग पर अधिक ध्यान देने की जरूरत है क्योंकि वैश्विक बाजार में इसे वह ऊंचाई, सम्मान, आर्थिक लाभ और मान्यता नहीं मिल पाई है जिसका यह हकदार है। इसके अलावा आधुनिक वैश्वीकृत दुनिया में, बड़े ब्रांड आधुनिक तकनीक, फंड, प्रचार सुविधाओं, विपणन रणनीतियों, प्रबंधन और प्रशिक्षण बुनियादी ढांचे और आधुनिक युवाओं के लिए आकर्षक पैकेजों से सुसज्जित हैं। वर्तमान जरदोजी उद्योग इन सभी पहलुओं में काफी पीछे है और अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहा है। इसलिए, इस अध्ययन का उद्देश्य इस उद्योग और शिल्पकारों की वास्तविक स्थिति की खोज और खुलासा करना और स्थिति को सुधारने के लिए उपयुक्त और व्यावहारिक समाधान सुझाना है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः, जबकि ज़री ज़रदोज़ी उद्योग को कठिन चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, इसमें पुनरुद्धार और विकास की भी काफी संभावनाएं हैं। इसके मुद्दों को सामूहिक रूप से संबोधित करके और नवाचार और स्थिरता के माहौल को बढ़ावा देकर, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि यह उत्कृष्ट कला रूप सांस्कृतिक विरासत और आर्थिक विकास दोनों को समृद्ध और समृद्ध करता रहे।

सन्दर्भ

1. अहमद, वाई. और अनीस, एम., 2019. लखनऊ में चिकन हस्तशिल्प उद्योग: ऐतिहासिक विकास और उद्योग विश्लेषण। रिसर्च रिव्यू इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी। वॉल्यूम. 4, अंक 12
2. आर्य, पी. और साधना, एस., 2002. डायग्नोस्टिक स्टडी, कारीगर: चिकन कढ़ाई क्लस्टर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश। नई दिल्ली: यूनिडो सी.डी.पी. सिडबी (भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक) द्वारा प्रायोजित
3. दास, आर., 2011. निष्पक्ष व्यापार और सभ्य कार्य की प्रथाओं में लिंग: भारत में एक निष्पक्ष व्यापार संगठन में उत्पादन श्रृंखला विश्लेषण। लिंग, प्रौद्योगिकी और विकास, 15(1), पीपी.101-125।
4. डीन, टी.जे. और मैकमुलेन, जे.एस., 2007। स्थायी उद्यमिता के एक सिद्धांत की ओर: उद्यमशीलता कार्रवाई के माध्यम से पर्यावरणीय गिरावट को कम करना। जर्नल ऑफ बिजनेस वेंचरिंग, 22(1), पीपी.50-76।
5. ढींगरा, वी. और ढींगरा, एम., 2012. हस्तशिल्प श्रमिकों के कार्य जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाले कारक-मुरादाबाद और उसके आसपास हस्तशिल्प इकाइयों का एक अध्ययन। न्यूयॉर्क साइंस जर्नल, 5(10), पीपी.105-113।
6. फैसल, ए. और खान, ए.ए., 2014. कला महिला (ग्रामीण प्रशिक्षित महिलाओं का संघ): असंगठित को संगठित करना। न्यू मैन इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी स्टडीज, 12(1), पीपी 39-47
7. फील्ड, ए., 2009. एसपीएसएस का उपयोग करके सांख्यिकी की खोज (तीसरा संस्करण)। ऋषि प्रकाशन

8. फुस्फेल्ड, डी.आर., बेट्स, टी. और बेट्स, टी.एम., 1984. शहरी यहूदी बस्ती की राजनीतिक अर्थव्यवस्था। एसआईयू प्रेस।
9. गर्ग, आर. और सिद्धपुरिया, एम., 2015. प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने के लिए रणनीतिक हस्तक्षेप: भारत में सूत ज़री उद्योग का एक मामला। एआई एंड सोसाइटी, 30(2), पीपी.235-249
10. होए, डब्ल्यू., 2011. उत्तरी भारत में व्यापार और विनिर्माण पर एक मोनोग्राफ। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
11. स्टोरी, डी.जे., 2016. लघु व्यवसाय क्षेत्र को समझना। रूटलेज।
12. स्ट्रैसडिन, के., 2012. एम्पायर ड्रेसिंग- रानी एलेक्जेंड्रा के कोरोनेशन गाउन का डिजाइन और कार्यान्वयन। जर्नल ऑफ़ डिजाइन हिस्ट्री. वॉल्यू म. 25 नंबर 2

Corresponding Author

Samriddhi Kushwaha*

Research Scholar, Bhagwant University